पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

मिचिङ[1] लोककथाएँ

संग्रह व अनुवाद : डॉ. नंदिता दत्त

मिचिङ भाषा में 'मि' का अर्थ 'मनुष्य' और 'यांचि' का अर्थ 'गोरा अथवा अच्छा' होता है, तो इस हिसाब से मिचिङ का अर्थ हुआ 'अच्छा या गोरा मनुष्य'। इनके रहन-सहन, वेश-भूषा सभी में एक अनोखा वैचित्र्य छिपा हुआ है, जो असम के साथ-साथ सम्पूर्ण भारत की संस्कृति को और अधिक विविधतापूर्ण तथा गौरवमयी बनाता है। ये मूलतः एक कृषि प्रधान जनजाति होने के साथ-साथ फुर्तीले और जाँबाज़ प्रवृत्ति के लिए जाने जाते हैं। किंवदंती के अनुसार ये लोग अरुणाचल के सीमावर्ती इलाकों से असम में आकर नदियों के किनारे बसने लगे थे, धीरे-धीरे ये फैलने लगे और असम के अलग-अलग जगहों में जाकर बस गए। मिचिङ जनजीवन में लोक-कथाओं का प्रचलन बहुत पुराना है। ये लोग प्रकृति के काफ़ी नजदीक हैं, इसलिए इनकी लोककथाओं में प्रकृति के उद्भव व विकास की कहानियाँ भी शामिल हैं। लोककथा एक सृजन-कला होती है। किसी भी समाज में किसी अनजान प्रणेता द्वारा इसकी सृष्टि होती है और यह मौखिक रूप से प्रचलित होती जाती है। यह एक जीवंत कला है; लोग इसे कहना और सुनना पसंद करते हैं। अपनी लोकप्रियता के कारण यह हर युग में उपलब्ध होता है। इसीलिए इसका संबंध व्यक्ति विशेष से न होकर समाज विशेष होता है।

अन्य लोककथाओं की भाँति मिचिङ लोककथाओं में भी कई प्रकार की कथाएँ शामिल हैं; यथा-

- पौराणिक
- नैतिक
- सामाजिक
- बाल-जीवन उपयोगी
- जीव-जन्तु से संबन्धित आदि

चलिये कुछ मशहूर लोककथाओं के बारें में जानते हैं, जो मिचिङ लोकजीवन में प्रचलित हैं और जिनको वे आज भी सुनाते हैं। इन कथाओं में आप प्रकृति के साथ उनका जुड़ाव महसूस कर सकते हैं और साथ ही साथ यहाँ उनके सहज-सरल जीवन का रूप भी उजागर हुआ है।

(क) सूर्य और चंद्रमा की कथा

सूर्य और चंद्रमा दोनों भाई थे, सूर्य बड़ा और चंद्रमा छोटा। एक दिन अपने पिता के साथ दोनों किसी के घर दावत पर गए हुए थे। लौटते वक्त चंद्रमा ने देखा कि सूर्य के हाथ में एक पोटली है। पूछा तो पता लगा कि उसमें माँ के लिए अन्न

का एक हिस्सा है। चंद्रमा को यह सोच-सोचकर बुरा लगने लगा कि अब माँ सूर्य से अधिक स्नेह करेंगी। वह सोच ही रहा था कि बीच रास्ते दोनों को ठहरने के लिए बोलकर उनके पिता जंगल चले गए; सूर्य भी साथ चलने लगा। चंद्रमा ने सोचा कि क्यों न कुछ किया जाए; उसने पेड़ के पत्तों से गोबर का एक टुकड़ा लपेटा और माँ के लिए ले आया। घर आकर दोनों बच्चों ने माँ को अपना-अपना तोहफ़ा दिया। सूर्य के तोहफ़े को देखकर माँ बड़ी प्रसन्न हुईं। उसके बाद चंद्रमा के तोहफ़े को जब माँ ने खोला तो उन्हें बहुत गुस्सा आया; मारे गुस्से के उन्होंने चंद्रमा के शरीर पर पोटली फेंककर मारी और सारा गोबर उसके शरीर पर तितर-बितर होकर गिर गया। इसलिए आज भी चंद्रमा के चेहरे पर दाग है और वह दाग उसकी माता द्वारा दिया गया है।

समीक्षा व नीति शिक्षा

जीवन में कभी भी ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, जीतने के लिए चंद्रमा की तरह कूट-बुद्धि का प्रयोग करेंगे तो उसी के जैसा हाल होगा। काम तो सभी करते हैं, पर नीयत साफ होना जरूरी होता है। यहाँ सूर्य की नीयत साफ थी और चन्द्रमा की नियत में खोट था; नतीजा आपके सामने है।

(ख) बंदर का मुँह क्यों काला होता है?

सीता मैया को जब रावण हरण कर के ले गया था, तब राम की चेतावनी लेकर हनुमान जी लंका पधारे थे, जहाँ हनुमान को डराने के लिए उसकी पूँछ में आग लगा दी जाती है। जब अनेक प्रयत्नों के बाद भी आग न बुझी तो हनुमानजी सीता मैया के पास जा पहुंचे और समाधान मांगने लगे। देवी ने कहा कि हनुमान अब तो तुम्हें मुँह से इस आग को बुझाना पड़ेगा, इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है। माता के उपाय से हनुमान ने अपने मुँह में पूंछ डालकर आग तो बुझा ली, पर उनका मुँह काला पड़ गया। इस बात से हनुमान अत्यंत दुखी हो गये और माता से कहने लगे, "माता अब मैं क्या करूँगा? सारे दूसरे वानर मुझ पर हँसेंगे!" तब माता ने उत्तर दिया," हे परम भक्त, आज से केवल तुम्हारा ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण वानर जाति के होंठ से मुँह तक का निचला भाग श्याम वर्ण का होगा। इसीलिए तब से बंदरों के मुंह का रंग काला बन गया है और जो आज भी काला है।

समीक्षा व नीतिगत शिक्षा

जब आपकी श्रद्धा में शक्ति हो तो भगवान आपकी सहायता जरूर करते हैं। इसके साथ ही यहाँ मिचिङ समाज में रामायण की कथा के प्रचार का आभास भी होता है।

(ग) कीड़े-मकोड़े और मच्छरों की जन्म-कहानी

एक बार पिता अपने बेटे को साथ लेकर जंगल की ओर निकल पड़े। काम करते-करते पिता को थोड़ी दूर जाना पड़ा; तब उन्होंने अपने थूक से एक घेरा बनाया और कहा कि इस घेरे के भीतर ही रहना, क्योंकि यहाँ शाम को राक्षस आते हैं। बेटा बाप का इंतज़ार करने लगा। इस तरह इंतज़ार करते-करते शाम हो आयी पर बाप न लौटा। बेटे को शक होने लगा; वह अपने पिता

को चिल्ला-चिल्लाकर आवाज़ देने लगा, वह घेरे से बाहर भी नहीं आ सकता था; तभी '*आबुतुनतुरुङ्ग*' बोलकर किसी ने आवाज़ लगायी। बेटा समझ गया कि उसके बाप को राक्षस ने खा डाला, वह डर के मारे बेचारा बगल के पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। सुबह होने से पहले ही राक्षस वहाँ तक आ पहुँचा और पूछा कि बेटे तुम पेड़ पर कैसे चढ़े? उसने बड़े ही चालाकी से उत्तर दिया कि नीचे रखे हुए दा' (लकड़ी फाड़ने का औजार) पर पैर रखकर आ जाओ; जब राक्षस ने ऐसा करना चाहा तो उसके पैर बुरी तरह से जख्मी हो गये। फिर भी उसने लड़के को खाने के लालच में दोबारा पूछा, " बेटा कैसे चढ़े ऊपर?" लड़के ने फिर जवाब दिया कि अच्छी तरह देखिये पेड़ के ठीक नीचे एक कुल्हाड़ी रखी है; उस पर पाँव रखकर आप ऊपर आ सकते हैं; इस बार जब कोशिश की तो राक्षस का हाल बहुत ज्यादा बुरा हो गया, वह खून से लथ-पथ हो गया और गिर पड़ा। मौके का फ़ायदा उठाकर बड़ी ही बहादुरी से लड़के ने राक्षस को मारकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर नदी में फेंककर कहा- आज से तू कीड़े-मकौड़े और मच्छर बनकर पैदा होगा। फिर वह घर वापस आ जाता है और इसी तरह कीड़े-मकोड़े और मच्छरों का जन्म होता है।

समीक्षा व नीति शिक्षा

अगर मन में साहस, आत्मविश्वास और दिमाग में उपस्थित बुद्धि हो तो कठिन से कठिन समस्या का भी हल निकल आता है। यहाँ मिचिङ जनमानस में प्रचलित भूत-प्रेत आदि से संबन्धित विश्वासों की जानकारी मिलती है और साथ ही उनकी बुद्धि और साहसिकता का प्रमाण भी मिलता है।

ख. कुत्ता और सुअर

मिचिङ लोग सुअर पालते हैं और उसका मांस खाते हैं; उनकी पूजा में भी सुअर का मांस चढ़ता है। कुत्ता उनके मचान घर के ऊपर रहता है और सुअर नीचे, लेकिन उनके समाज में सुअर का मान ज्यादा है; आइये जानते हैं इसके पीछे की कहानी।

बहुत पहले की बात है। कुत्ता और सुअर एक ही व्यक्ति की संतान थे। एक दिन बाप ने दोनों से कहा कि जो एक ही प्रहर में एक बीघा खेत की जमीन जोतेगा उसी को वे अपने साथ रखेंगे। अगले ही दिन बड़े ही प्रयत्न से सुअर ने निर्धारित समय पर अपने हिस्से का काम कर दिया। पर कुत्ता नहीं कर पाया; उसके पास उतना सामर्थ्य था ही नहीं। उसने कु-बुद्धि का इस्तेमाल किया और सुअर द्वारा जोती गई जमीन के चारों ओर गोल-गोल चक्कर लगाकर बाप से कहा कि यह उसने जोता है। सुअर ने जब बाप से इस अन्याय की शिकायत की तो कुत्ते ने कहा कि देखिये मेरे शरीर पर मिट्टी है और उस जमीन पर भी मेरे ही पैरों के निशान हैं। बाप को कुत्ते का प्रमाण उचित लगा तो उन्होंने कुत्ते को घर के ऊपर रखा और सुअर को नीचे रखने लगे। जब उन्हें एक दिन सच्चाई का पता चला तो वे अत्यंत दुखी हुए परंतु मर्द होने के नाते वे अपने कथन को वापस नहीं ले सके। किंतु उन्होंने यह घोषित किया कि

झूठ बोलने के कारण कुत्ते को आजीवन घर की पहरेदारी करनी पड़ेगी और उनका मांस भी देवता या मनुष्य के काम नहीं आएगा। दूसरी तरफ घर के नीचे रहने के बावजूद सुअर को खिला-पिलाकर रखा जाएगा, पूजादि में भी उसकी जरूरत पड़ेगी।

समीक्षा व नीति शिक्षा

प्रस्तुत कहानी से मिचिङ समाज की रीति-नीति और वचन के मान का प्रमाण मिलता है। साथ ही यह शिक्षा मिलती है कि परिश्रम का फल मीठा होता है और झूठ का परिणाम हमेशा ग़लत होता है। हो सकता है कि कभी कुछ समय के लिए झूठ आनंद प्रदान करे,परंतु वह सदैव क्षणिक होता है; सत्य सदैव प्रकाशवान और दीर्घस्थायी होता है।

लोककथाएँ अपनी रोचकता और नैतिक-ज्ञान के लिए ही सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। लोक-कथाओं की ख़ासियत यह भी है कि मौखिक रूप से प्रचलित होने के कारण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक इस के रूपों में थोड़ा परिवर्तन भी हो जाता है। इसकी दूसरी विशेष बात यह है कि एक ही कथा को दो अलग-अलग जगहों में अलग-अलग पात्र,स्थान आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। बहरहाल, यह तय है कि लोक कथा अपनी विचित्रता के लिए मशहूर है और लोग भिन्न तरीके से इसका आनंद उठाते हुए नज़र आते हैं।

1. मिचिंग- मिचिंग शब्द का उच्चारण 'मिसिङ' के रूप में किया जाता है। व्युत्पत्तिगत अर्थ को ध्यान रखकर इस शब्द का प्रयोग मूल रूप में किया गया है।

संपर्क सूत्र :

सहायक अध्यापक

हिंदी विभाग, नॉर्थ लक्षीमपुर कॉलेज, असम